व्यावसायिक पाठ्यक्रम के विद्यार्थियों में नशे की प्रवृत्ति : एक वैयक्तिक अध्ययन

Drug Addiction in Students of Professional Courses: A Case Study.

उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान मान्य विश्वविद्यालय

गाँधी विद्या मन्दिर, सरदारशहर

को

पी-एच.डी.(शिक्षा) उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध प्रारूप

शोधकर्ता:

प्रेम सिंह

शोध निर्देशक :

डॉ. लोकेश शर्मा

एसोसिएट प्रोफेसर (शिक्षा)

बुनियादी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय (सीटीई)

गांधी विद्या मंदिर, सरदारशहर

जिला-चूरू (राजस्थान) - 331401

2016

शोध – प्रारूप

1. शोधकर्ता का नाम : प्रेम सिंह

2. संस्थान का पता : बुनियादी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय (सीटीई), गांधी विद्या मंदिर, सरदारशहर

3. शोध विषय : व्यावसायिक पाठ्यक्रम के विद्यार्थियों में नशे की प्रवृत्ति : एक वैयक्तिक अध्ययन
Drug Addiction in Students of Professional Courses: A Case Study.

1. –प्रस्तावना :–

नशा एक ऐसी बीमारी है जो हमे हमारे समाज को, हमारे देश को तेजी से निगलते जा रही है। आज शहर और गांवो मे पढने लिखने की उम्र मे विद्यालय एवं कॉलेज के छात्रो के साथ भावी शिक्षक भी मादक पदार्थो के बाहुपाश मे जकड़ते जा रहे है।

इस बुराई के कुछ हद तक जिम्मेदार हम लोग भी है। हम अपने काम धन्धों मे इतना व्यस्त हो गये है कि हमें फुर्सत ही नही है ये जानने की कि हमारा बालक कहां जा रहा है क्या कर रहा है कोई परवाह नही बस बच्चो की मांगे पूरी करना ही अपनी जिम्मेदारी समझ बैठे है।

बदलती हुई सामाजिक मान्यताएं, कुछ नया करने की चाहत, तरह तरह के तनाव आदि ऐसे कारण है जिकी वजह से समाज मे नशे का प्रचलन तेजी से बढ रहा है। सबसे चिन्ताजनक बात यह है कि इन नशीले पदार्थो के शिकार मे भावी शिक्षको का प्रतिशत तेजी से बढा है। भावी शिक्षको मे नशे की शुरूआत आमतौर से विद्यालयो के अन्दर मीठी सुपारी और सादे मसाले से होती है, जो धीरे धीरे तम्बाकुयुक्त गुटखा और सिगरेट से होती हुई स्मैक, चरस, गांजा तक पहुंच जाती

है। साथियों के दबाव अथवा सामाजिक चक्रव्यूहो मे फंसे भावी शिक्षक जब एक बार इनकी गिरफ्त मे आ जाते है ,तो उन्हें इस दलदल से निकालना बेहद दुष्कर हो जाता है। यदि अभिभावकों द्वारा अपने बालको पर बराबर नजर रखी जाये और उनकी गतिविधियो पर बराबर ध्यान रखा जाये तथा उनके व्यवहार और चालढ़ाल को देखकर इन नशीले पदार्थो की बीमारी को शुरू मे ही पकड़ा जा सकता है।

कभी शौक के नाम पर तो कभी दोस्ती की आड़ मे तो कभी दुनिया के दुःखों का बहाना करके तो कभी कोई मजबूरी बताकर, कभी टेंशन तो कभी बोरियत दूर करने के लिये लोग शराब, सिगरेट, तम्बाकू, गुटखा ,स्मैक, चरस व गांजा आदि अनेक प्रकार के मादक द्रव्यो का सेवन करते है लेकिन नशा कब उनकी जिदंगी का हिस्सा बन जाता है पता ही नही चलता है तब तक बहुत देर हो चुकी होती है।

वर्तमान समय मे सन् 2005 से लेकर अब तक हमारे राज्य राजस्थान मे शिक्षण प्रशिक्षण महाविद्यालयो की संख्या मे वृद्धि हुई है । इस समय में देखने मे यह पाया है कि भावी शिक्षकों को हम आसानी से देखते तथा उनकी हर आदत से भी परिचित होते है। उनके बोलने, उनके व्यवहार तथा उनकी आदतों के बारे मे आसानी से देखने मे मिलते है। वर्तमान समय मे अधिकांश भावी शिक्षक गुटखे की लत से वशीभूत है तथा इसके अलावा सिगरेट, शराब आदि की लत भी उनमें पायी जाती है। इस प्रकार से वर्तमान समय में भावी शिक्षक नशे की लत से ग्रसित हैं।

आधुनिक शिक्षित समाज मे आज हानिकारक नशे के पदार्थो का व्यापक प्रयोग हो रहा हैं। नशीले पदार्थो का उपयोग प्राचीन समय मे भी होता था, लेकिन बहुत कम मात्रा में। प्रायः निर्धन, किसान, मजदूर, और अशिक्षित लोग ही इनका उपयोग करते थे, किन्तु आज नशीले पदार्थो का उपयोग भावी शिक्षको तथा उच्च धनी वर्ग के व्यक्तियो मे भी होने लगा है। पहले नशीले पदार्थो के उपयोग को स्वास्थ्य की दृष्टि से देखा जाता था अर्थात जो लोग इनका उपयोग करते थे उन्हे समाज मे अच्छा नही समझाा जाता था इसके विपरीत आज नशीले पदार्थो का प्रयोग करने वालों को कुछ प्रतिष्ठा सी मिलने लगी है। पहले इन पदार्थो का प्रयोग वृद्ध तथा प्रौढ़ व्यक्यिो मे होता था। किन्तु आज यह सब सभी वर्ग के लोगो के साथ साथ भावी शिक्षको के लिये भी आम बन गया है। वे बेझिझक होकर इन नशीले पदार्थो का सेवन कर रहे है। आज नशीले पदार्थो के सेवन की समस्या विश्वव्यापी बन चुकी है। आज विश्वभर के अनेक शिक्षित लोग इन पदार्थों का सेवन कर रहे है। सबसे ज्यादा चिन्ता और दुःख की बात तो यह है कि आज भावी शिक्षको के द्वारा

नशे के पदार्थो का सेवन किया जा रहा है। पाश्चात्य देशो की भाति भारत मे भी महारोग अभूतपूर्व गति से फैल रहा है ।

नशे के शिकार व्यस्क, प्रौढ़, वृद्व, स्त्री-पुरूष सभी हो सकते है। लेकिन प्रायः देखा गया है कि भावी शिक्षक भी इस व्यसन मे फंस जाते है। इसका सबसे बड़ा कारण कुसंगति है। आज के इस व्यस्त, मशीनी और भागदौड़ वाले जीवन में कभी-कभी मां बाप अपने बच्चों की ओर पूरा ध्यान नहीं दे पाते है और बच्चो की समस्याओं का समाधान नहीं हो पाता है। इतना ही नही उन्हे अपने माता-पिता सें सच्ची हमर्ददी भी नही मिल पाती है। बेरोजगार भावी शिक्षक संवेदनशील नवयुवक अपने आपको दुविधा और असमंजस की स्थिमि में पाता है। वह इस दुविधा की स्थिति मे नशीले पदार्थो का सेवन करने लग जाता है। इस व्यसन से छुटकारा पाने के लिये उसके परिवार के लोगो, सम्बन्धियों और समाज का सहयोग होना बेहद जरूरी है सबसे पहले तो भावी शिक्षक को यह दृढ संकल्प लेना चाहिये कि वह भविष्य मे कभी भी नशीले पदार्थों का सेवन नहीं करेगा।

नशीले पदार्थो की समस्या आज विश्वव्यापी समस्या के रूप मे हमारे सामने खड़ी है। लगभग सभी देशो ने ऐसे नशे के पदार्थो के दुरूपयोग पर रोक लगाई हुई है। इसके विरोध मे कानून भी बनते है, जिनमें कठोर दण्ड का विधान है। कुछ देशो मे तो इनके लिये मृत्युदण्ड का भी प्रावधान किया गया है। परन्तु विशेष बात यह है कि एक भावी शिक्षक जो समाज का एक दर्पण होता है वह भी इस बुराई मे फंस जाता है। किसी भी सामाजिक बुराई को केवल कानून व दण्ड के बल पर दूर नही किया जा सकता। चूंकि इन नशीले पदार्थो के उपयोग पर कानूनी प्रतिबंध है अतः इनकी तस्करी एक बड़ा लाभदायक धन्धा बन गई है। इनकी तस्करी को रोकने हेतु कानून भी बने है और कठोर दण्ड का प्रावधान भी किया गया है, लेकिन तस्करी को भी कानून और दण्ड के सहारे रोक पाने मे सफलता नही मिल पायी है। इसके रोकथाम हेतु भारत सरकार द्वारा भी प्रयास किये गये है कि सार्वजनिक स्थानो पर नशीले पदार्थो का सेवन करना कानूनन अपराध है। अगर सार्वजनिक स्थान पर धूम्रपान किया गया तो सम्बन्धित व्यक्ति पर 200 रूपये का जुर्माना दण्ड के रूप मे निश्चित किया गया है। साथ ही प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के द्वारा भी भारत को तम्बाकू मुक्त बनाने का अभियान चलाया गया है। इस बुराई को समूल रूप से नष्ट करने हेतु सामाजिक चेतना, जागृति और एकजुट प्रयास करने की जरूरत है।

2. अध्ययन का महत्व :-

मनोवैज्ञानिक अनुसंधान के परिणामस्वरूप शिक्षा के क्षैत्र मे घटित प्रमुख परिवर्तन अध्ययन मे भावी शिक्षको को प्रधानता देता है। अध्यापन तभी सफल माना जाता है जब अध्यापक अपनी कक्षा के सभी बालको पर व्यक्तिगत रूप से ध्यान देता है। प्रत्येक बालक के विकास का क्रम एक दूसरे से भिन्न होता है। उनकी आवश्यकताऐं भिन्न होती है। छात्रों के बारे मे ज्ञान प्राप्त करने का महत्व रीविस तथा जुड़ ने इस प्रकार व्यक्त किया है।

भारत मे माता -पिता अपने बच्चों की आवश्यकताओ तथा उनके गुणो का ज्ञान प्राप्त किये बिना ही उनका भविष्य निश्चित करते है। इसका परिणाम उपयोगी नहीं होता है। बहुत से व्यक्ति अपनी वृतियो को बदलते हुए पाये जाते है। वे किसी वृति मे कुशलता प्राप्त नही कर पाते है। ऐसे व्यक्तियो को उचित मार्गदर्शन व निर्देशन की सहायता देने के लिये आवश्यक है कि उनकी विशेषताओ का ज्ञान प्राप्त कर लिया जाये।

वैयक्तिक अध्ययन के अन्तर्गत भावी शिक्षक तथा उसके संबन्धित विषयों का अध्ययन किया जाता हैं। सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक अनुसंधानो के अन्तर्गत जो अनुसंधान किये जाते है उन अनुसंधानो के लिये मुख्यतः दो तरह से उपागमों (APPROUCHES) का उपयोग किया जाता है।

नशा नाश करता है। नशे की आदत बुरी आदत होती है। इसका स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। वर्तमान में नशे के कई रूप प्रचलित हैं, जैसे - गुटके, शराब, अफीम, चरस, गांजा आदि। इससे देश की जड़े कमजोर होती है। नशा रोकने हेतु सरकार को सकारात्मक नीतियां बनानी चाहिए। नशे की आदत से मानव पर होने वाले दुष्प्रभावों को रोकने के लिए नशा मुक्ति शिवरों को आयोजन होना चाहिए। मानव अपने अल्प समय के सुख भोग हेतु वह अपने पैरो पर ही कुल्हाड़ी मारता है। इससे भावी पीढ़ी भी उनका अनुकरण करने लगती है। कई बहुराष्ट्रीय कम्पनियां भड़किले विज्ञापनों द्वारा लोगों को गुमराह करती है। नशे की आदत बालकों में भी काल्य काल से ही होने से वे अनेक रोगों के शिकार हो जाते हैं, इनमें सबसे घातक कैंसर है।

2008-09 से भारत सरकार ने सार्वजनिक स्थानों पर धूम्रपान को निषेध कर दिया है। यदि कोई ऐसा करता है तो उस पर 200 रूपये का जुर्माना लगाया जाता है। ऐसी ही योजनाओं के द्वारा इस आदत पर निजात पायी जा सकती है।

व्यावसायिक या रोजगारपरक पाठ्यक्रमों के विद्यार्थियों के जीवन और व्यक्तित्व पर नशे की प्रवृत्ति का दुष्प्रभाव पड़ने की संभावना अधिक होती है तथा ऐसी स्थिति में उनका अपने कर्तव्य पथ से भटकना और दुर्व्यसनों में लिप्त हो जाना सहज हो जाता है। इसका दुष्प्रभाव यह होता है कि उनके व्यक्तित्व का विकास उनके व्यवसाय और भविष्य के समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप नहीं हो पाता है। परिणामतः देश को नवीनतम ऊँचाईयों की ओर ले जाने वाले भविष्य के ये कर्णधार देश के लिए विकास में योगदान देने के स्थान पर निजी हित के पूजक बनकर अयोग्य नागरिक सिद्ध होते हैं और देश को पतन की ओर अग्रसर कर देते है। अतः प्रस्तुत समस्या को अध्ययन हेतु चयनित करना इसलिए महत्वपूर्ण है ताकि हम यह ज्ञात कर सकें कि वर्तमान व्यावसायिक शिक्षा प्रणाली के विद्यार्थियों में नशे की प्रवृत्ति किस स्तर की है।

3. <u>अध्ययन का औचित्य</u> :-

किसी भी राष्ट्र का आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक विकास उस देश की शिक्षा पर निर्भर करता है। शिक्षा के अनेक आयाम हैं जो राष्ट्रीय विकास में शिक्षा के महतवप को रेखांकित करते हैं। वास्तविक रूप में शिक्षा का आशय है ज्ञान, ज्ञान का आकांक्षी है शिक्षार्थी और इसे उपलब्ध कराता है शिक्षक।

शिक्षक वह व्यक्ति है जो एक बगीचे को भिन्न-भिन्न रूप रंग के फलों से सजाता है जो छात्रों को कांटों पर भी मुस्कुराकर चलने का प्रोत्साहित करता है। उन्हें जीने की कला सीखाता है। शिक्षक के लिए सभी छात्र समान होते हैं और वह सभी का कल्याण चाहता है। शिक्षक ही वह धुरी होता है, जो विद्यार्थी को सही-गलत व अच्छे बुरे की पहचान करवाते हुए बच्चों की अन्तर्निहित शक्तियों को विकसित करने की पृष्ठभूमि तैयार करता है।

अध्यापक प्रेरणा की फुंहारों से बालक रूपी मन को सींचकर उसकी नींव को मजबूत करता है तथा उसके सर्वांगीण विकास के लिए उनका मार्ग प्रशस्त करता है।

किताबी ज्ञान के साथ नैतिक मूल्यों व संस्कार रूपी शिक्षा के माध्यम से एक शिक्षक ही अच्छे चरित्र का निर्माण करता है। शिक्षा से ही मानव जीवन का कल्याण हो सकता है। बिना शिक्षा के मानव की सफलता की परिकल्पना करना असंभव सा प्रतीत होता है।

इस समस्या के सन्दर्भ में किये गये उपर्युक्त शोध कार्यों के साथ-साथ अन्य शोध कार्यों के अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि चयनित समस्या को लेकर अलग-अलग बहुत से शोधकार्य किये गये हैं किन्तु व्यावसायिक पाठ्यक्रम (शिक्षा) के भावी शिक्षकों में नशे की प्रवृत्ति को लेकर वैयक्तिक अध्ययन अभी तक प्रकाश में नहीं आया है। शोधकर्त्ता को व्यावसायिक पाठ्यक्रम के भावी शिक्षकों में नशे की प्रवृत्ति का अध्ययन इसलिए औचित्यपूर्ण लगा क्योंकि नशे की प्रवृत्ति आज के युग की सबसे महत्वपूर्ण समस्या है। अतः शोधकर्त्ता ने अपने अध्ययन हेतु इस समस्या का चयन किया तथा इसे अपने शोध का मुख्य प्रतिपाद्य विषय बनाया। शोधार्थी को यह विश्वास है कि इस शोध का परिणाम शिक्षा जगत को योगदान देने में सहायक होगा।

4. अध्ययन के उद्देश्य :-

1. भावी शिक्षकों में नशे की प्रवृत्ति का अध्ययन करना।
2. भावी शिक्षकों में नशे के प्रकारों एवं नशे की आवृत्ति का अध्ययन करना।
3. नशे की प्रवृत्ति से ग्रसित भावी शिक्षकों की इकाई का केस प्रारूप बनाना।
4. भावी शिक्षकों में नशे की प्रवृत्ति के कारणों का अध्ययन करना।
5. भावी शिक्षकों में नशे के उन्मूलन हेतु कार्यक्रम का निर्माण करना।

5. सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन :-

1. **गुप्ता तथा मिश्रा (2008)** ने - ''परास्नातक स्तर पर अकादमिक तथा व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त कर रही छात्राओं के आत्म-बोध का तुलनात्मक अध्ययन'' विषय पर शोधकार्य किया तथा निष्कर्ष में पाया कि अकादमिक शिक्षा प्राप्त कर रही छात्राओं तथा व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त

कर रही छात्राओं के आत्मबोध में सार्थक अन्तर है। व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाली छात्राओं का आत्मबोध अकादमिक अध्ययन करने वाली छात्राओं की तुलना में अधिक स्पष्ट पाया गया।[1]

2. **सोनी, श्रीमती रेखा (2010)** ने – ''स्नातक स्तर के विविध व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति, मूल्यों, सृजनात्मकता व समायोजन का अध्ययन'' शीर्षक पर पी–एच.डी. स्तरीय शोधकार्य किया तथा निष्कर्ष में पाया कि विभिन्न शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्ययनरत ग्रामीण व शहरी छात्रों की व्यावसायिक अभिवृत्ति तथा मूल्यों एवं व्यावसायिक सृजनात्मकता में सार्थक अन्तर नहीं है। इन महाविद्यालयों के ग्रामीण एवं शहरी छात्रों के समायोजन में अन्तर पाया गया। शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालयों की ग्रामीण व शहरी छात्राओं की व्यावसायिक अभिवृत्ति तथा मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं है। जबकि समायोजन तथा व्यावसायिक सृजनात्मकता में अन्तर पाया गया। विभिन्न चिकित्सकीय संस्थानों में अध्ययनरत ग्रामीण व शहरी छात्रों की व्यावसायिक अभिवृत्ति, मूल्यों तथा व्यावसायिक सृजनात्मकता में सार्थक अन्तर नहीं है जबकि समायोजन के स्तर में अन्तर पाया गया। चिकित्सकीय संस्थानों की ग्रामीण व शहरी छात्राओं के मूल्यों, समायोजन तथा व्यावसायिक सृजनात्मकता में आंशिक अन्तर पाया गया। विभिन्न अभियांत्रिकी महाविद्यालयों के शहरी व ग्रामीण छात्रों की व्यावसायिक अभिवृत्ति, मूल्य तथा व्यावसायिक सृजनात्मकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है जबकि शहरी छात्र अधिक समायोजित पाये गये। इन महाविद्यालयों की ग्रामीण तथा शहरी छात्राओं की व्यावसायिक अभिवृत्ति तथा समायोजन स्तर में अन्तर पाया गया जबकि इनके मूल्यों एवं व्यावसायिक सृजनात्मकता में सार्थक अन्तर नहीं है।[2]

3. **Basu (2011)** studied the prevalence and determinants of smoking practices among undergraduate medical students. The practice of smoking for last 6 months to 1 year was in 43.6% and 40% smoked less than 6 months. Half of them (50.9%) smoked 5-9 cigarettes per day. Peer pressure was

[1] भारतीय शिक्षा शोध–पत्रिका, (जनवरी–जून 2008), अंक – 1, पृष्ठ संख्या – 99–103
[2] सोनी, श्रीमती रेखा – पी–एच.डी., उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान मान्य विश्वविद्यालय, गॉधी विद्या मन्दिर, (2010)

significantly high in smokers (83.6%); 42% had other addictions. The effect of parental smoking on smoking habits of the participants was quite evident among smokers (82%), which was significantly higher than nonsmokers ($\chi_2 = 63.49$, $P < 0.05$). Peer pressure was the most important risk factor (57.69%) of initiation of smoking habit followed by parental influence (16.49%). Among morbidities of smokers, 60.6% were suffering from regular cough, 6% from bronchitis, and 2% had asthma

4. **Joseph and Zacker (2012)** examined peer pressure and tobacco smoking among undergraduate students of the University of Calabar, Nigeria. Result indicated that 46 per cent of tobacco use among undergraduate students were accounted for by peer pressure, while the ANOVA result indicated that peer pressure had significant influence on undergraduate students' tobacco use ($F=4.069$, $p<0.05$); the model further revealed that a unit increase in peer influence factor would result in 62% unit rise in the percentage of undergraduates that make use of tobacco substance. Result of independent samples test showed that the frequency of tobacco use differs between sexes ($t=3.100$, $p<0.05$). Study revealed that the frequency of tobacco use among undergraduate student in Nigeria's university environment was in the increase.

5. **Mishra, Pimple and Shastri (2009)** assessed the tobacco quit rates among employees, through self report history, and validate it with rapid urine cotinine test. He compared post-intervention KAP regarding tobacco consumption with the pre-intervention responses and assessed the tobacco consumption pattern among contract employees and provide assistance to encourage quitting. This is a cohort study implemented in a chemical industry in rural Maharashtra, India. All employees (104) were interviewed and screened for oral neoplasia. Active intervention in the form of awareness lectures, focus group discussions and if needed, pharmacotherapy was offered. Medical staff from the industrial medical unit and from a local referral hospital was trained. Awareness programs were arranged for the family members and contract employees. Forty eight per cent employees consumed tobacco.

शोधकर्ता शिक्षा के क्षेत्र में भारत एवं विदेशों में पूर्व में किये गये उक्त शोधकार्यों का पुनरावलोकन कर इस निष्कर्ष पर पहुँचा गया है कि व्यावसायिक पाठ्यक्रम के विद्यार्थियों में नशे की प्रवृत्ति : एक वैयक्तिक अध्ययन को सयुंक्त रूप से लेकर किया गया शोधकार्य अभी तक प्रकाश में नहीं आया है। इसलिए शोधकर्ता में यह जिज्ञासा हुई कि इस समस्या को अपने अध्ययन का मुख्य विषय बनाया जाये। इसलिये शोधकर्ता द्वारा ''व्यावसायिक पाठ्यक्रम के विद्यार्थियों में नशे की प्रवृत्ति : एक वैयक्तिक अध्ययन'' नामक शीर्षक को अपने शोधकार्य हेतु चयनित किया गया।

6. <u>अध्ययन में प्रयुक्त शब्दावली की व्याख्या</u> :–

व्यावसायिक पाठ्यक्रम :–

युनेस्को ने व्यावसायिक पाठयक्रम की परिभाषा इस प्रकार दी है– ***''व्यावसायिक पाठ्यक्रम शिक्षा का एक व्यापक प्रत्यय है, इसके अन्तर्गत शैक्षिक प्रक्रिया के सभी पक्ष तथा सामान्य शिक्षा तकनीकी शिक्षा विज्ञान से सम्बन्धित प्रयोगशाला कौशल, अभिवृत्तियों के ज्ञान तथा बोध से सम्बन्धित अतिरिक्त पक्षों को शामिल किया जाता है। जिसका सम्बन्ध आर्थिक सामाजिक जीवन तथा रोजगार की तैयारी से भी होता है। इस प्रकार की शिक्षा सामान्य शिक्षा का समन्वित खण्ड, सतत् शिक्षा तथा रोजगार के क्षेत्र की तैयारी का होता है।''***

नशा :–

नशा ऐसी बीमारी है जो हमें हमारे समाज को हमारे देश को तेजी से निगलते जा रही है आज शहर और गांवों में पढ़ने खेलने की उम्र में स्कूल और कॉलेज के बच्चे एवं युवा वर्ग मादक पदार्थ के बाहुपाश में जकड़ते जा रहे हैं।

नशा रोकने हेतु सरकार को सकारात्मक नीतियां बनानी चाहिए। नशे की आदत से मानव पर होने वाले दुष्प्रभावों को रोकने के लिए नशा मुक्ति शिवरों को आयोजन होना चाहिए। मानव अपने अल्प समय के सुख भोग हेतु वह अपने पैरो पर ही कुल्हाड़ी मारता है। इससे भावी पीढ़ी भी उनका अनुकरण करने लगती है। कई बहुराष्ट्रीय कम्पनियां भड़किले विज्ञापनों द्वारा लोगों को गुमराह करती है। नशे

की आदत बालकों में भी काल्य काल से ही होने से वे अनेक रोगों के शिकार हो जाते हैं।

शिक्षा :–

एक सुसंस्कृत देश होने के कारण भारत में प्राचीनकाल से ही शिक्षा की महत्वपूर्ण परम्परा चली आ रही है। प्रत्येक सुसंस्कृत समाज का एक जीवन–दर्शन तथा लक्ष्य होता है, जिसकी प्राप्ति शिक्षा और साहित्य के द्वारा होती है। शिक्षा के माध्यम से बालकों में उच्च आदर्शों व मूल्यों व प्रतिमानों की भावनाएँ विकसित होने की कल्पना की जा सकती है। शिक्षा सर्वांगीण विकास की प्रक्रिया है। शिक्षा जीवनपर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है। यह व्यक्ति के जीवन से लेकर मृत्यु तक चलती रहती है।

7. अध्ययन का परिसीमन :–

अध्ययन के प्रारम्भ में शोधकर्ता व्यावसायिक पाठ्यक्रम में नशे की प्रवृति पर एक Pilot Study करेगा। प्रस्तुत शोध में सीकर जिले के लक्ष्मणगढ़ तहसील के बी.एड. स्तर के 500 प्रशिक्षणार्थियों पर सर्वेक्षण कर एक अध्यन इकाई का चयन किया जायेगा एवं इस अध्ययन इकाई पर व्यक्ति अध्ययन विधि से नशे की प्रवृत्ति से ग्रसित 100 भावी शिक्षकों का वैयक्तिक अध्ययन किया जायेगा।

8. <u>शोधविधि एवं उपकरण</u> :–

प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण एवं व्यक्ति अध्ययन विधि के अन्तर्गत स्वनिर्मित अवलोकन अनुसूची व साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया जायेगा।

9- प्रस्तावित शोध प्रबन्ध का अध्याय क्रम :–

प्रथम अध्याय :– शोध की सम्प्रत्यात्मक पृष्ठभूमि, औचित्य, समस्या कथन, परिभाषीकरण, उभरने वाले प्रश्न, उद्देश्य, आकल्प एवं सीमांकन।

द्वितीय अध्याय :– सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन एवं प्रस्तावित शोध अध्ययन की उपादेयता।

तृतीय अध्याय :– शिक्षा के विद्यार्थियों में नशे की प्रवृत्ति।

चतुर्थ अध्याय :– शिक्षा के विद्यार्थियों में नशे के प्रकारों एवं नशे की आवृत्ति।

पंचम अध्याय :– नशे की प्रवृत्ति से ग्रसित विद्यार्थी इकाई के केस प्रारूप।

षष्ठ अध्याय :– शिक्षा के विद्यार्थियों में नशे की प्रवृत्ति के कारण।

सप्तम् अध्याय :– भावी शिक्षकों में नशे के उन्मूलन हेतु कार्यक्रम का निर्माण।

अष्ठम् अध्याय :– निष्कर्ष, शोध की उपादेयता, कार्ययोजना एवं सुझाव।

BIBLIOGRAPHY

1. ढ़ोढ़ियाल, एस. एवं. पाठक अरविन्द (1990) ''शैक्षिक अनुसंधान का विधि शास्त्र'', राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, पृष्ठ संख्या 73
2. भार्गव, महेश (2007) ''आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण + मापन'', एच.पी. भार्गव बुक हाउस, आगरा, पृष्ठ संख्या – 463
3. जफे, जे.एच (1975) नशीली दवाओं की लत और नशीली दवाओं के दुरूपयोग,एल.एस. गुडमैन एण्ड.ए.गिलमैन (एड्स) दफरामैकॉलोजिकल बेसिस ऑफ थेरापेयुटिस, न्यू यॉर्कः मैकमिलन, पीपी 284-324
4. लाल, डॉ. जे.एन० (1988) ''विकासात्मक मनोविज्ञान', नीलकमल प्रकाशन, गोरखपुर पृष्ठ संख्या – 365
5. माथुर, एस.एम. (2008) ''शिक्षा मनोविज्ञान'', अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा, पृष्ठ संख्या – 421-425
6. पाण्डेय, रामशक्ल (1992) ''"शिक्षा की दार्शनिक एवं सामाजिक पृष्ठभूमि" विनोद पुस्तक मंदिर आगरा, पृष्ठ संख्या 44
7. पचौरी, डॉ. गिरीश (2005) ''शिक्षण अधिगम एवं विकास के मनोवैज्ञानिक आधार'', इन्टरनेशनल पब्लिशिंग हाऊस, मेरठ, पृष्ठ संख्या–101
8. पाठक, पी.ड़ी.. (2007) ''शिक्षा मनो़विज्ञान'', विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, पृष्ठ संख्या – 450
9. त्यागी, जी. एस. डी. (1994) "शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक आधार" विनोद पुस्तक मंदिर आगरा, पृष्ठ संख्या 42

शोधकार्य में लगने वाला समय :–

प्रस्तुत शोधकार्य पूर्ण करने में अनुमानित दो वर्ष का समय लगेगा, जिसका विवरण निम्नलिखित प्रकार से किया जा रहा है :–

क्र.सं.	शोधकर्ता द्वारा किये जाने वाले शोधकार्य	अनुमानित समय
1	प्रथम अध्याय	4 माह
2	द्वितीय अध्याय	4 माह
3	तृतीय अध्याय	3 माह
4	चतुर्थ अध्याय	3 माह
5	पंचम अध्याय	3 माह
6	षष्ठ अध्याय	3 माह
7	सप्तम् अध्याय	2 माह
7	अष्ठम् अध्याय	1 माह
8	टंकण एवं बाईडिंग	1 माह
	कुल अवधि	**24 माह**

डॉ. लोकेश शर्मा
शोध निर्देशक

प्रेम सिंह
शोध छात्र